असम के कृष्ण भक्त कवि श्री माधवदेव द्वारा विरचित बरगीत के विषय-वस्तु का विश्लेषणात्मक अध्ययन

लेकिन जिस समय असमीया साहित्य के इतिहास में भक्ति मूलक साहित्य को आभिर्भाव के समय को तीन भागों में विभाजित किया गया। जैसे- *(1) प्राक्-शंकरी युग, (2) शंकरी युग, (3) शंकरोत्तर युग।* इस काल की समय सीमा सन् 1300 से 1826 ई. तक माना जाता है। शंकरी युग को असमीया साहित्य में शंकरदेवकालीन युग के नाम से जाना जाता है। यह युग असमीया साहित्य इतिहास का स्वर्ण-युग है। इसी समय पूर्वोत्तर के असम प्रान्त में शंकरदेव और माधवदेव जैसे महान संतो का आविर्भाव हुआ। शंकरदेव माधवदेव के गुरु थे। उन्हें ही असम के नव-वैष्णव धर्म के प्रवर्त्तक माना जाता है। इसी धर्म के प्रचार के उद्देश्य से उक्त दोनों संतो ने बरगीत जैसे मधुर भक्ति गीत लिखा। और इस गीत की रचना ब्रजाबुली भाषा में की है। नव-वैष्णव धर्म मूलतः कृष्ण भक्ति प्रधान है। सूरदास ने कृष्ण के सुगुण रुप की उपासना की है लेकिन शंकरदेव और माधवदेव ने कृष्ण की उपासना निर्गुण रुप में किया है। अपने भक्ति मार्ग में श्रीकृष्ण को छोड़कर अन्य देवी-देवता को स्थान नहीं दिया है। तप, जप, यज्ञ या व्यय सापेक्ष साधन-मार्ग की अपेक्षा श्रवण-कीर्तन और सत्संग द्वारा भक्ति के सहज-सरल मार्ग को अपनाने पर बल दिया है। भक्ति के क्षेत्र में ब्राह्मण चाण्डाल का सम अधिकार बताने का प्रयास किया है। अहिंसा, प्रेम, करुणा क्षमा आदि मानवीय सद्‌गुणों का विकास पर मानवतावाद की प्रतिष्ठा करना नव-वैष्णव धर्म का प्रधान लक्ष्य रहा है।

शोध आलेख की पृष्ठभूमिः-

असमीया साहित्य के वैष्णव भक्त कवि श्री मधवदेव का जन्म वर्तमान असम के लखीमपुर जिले में नारायणपुर अंचल के काचिकटा नदी के निकट लेटेकुपुखुरी नामक स्थान में हरिशिंगा बोरा के घर पर सन् 1489 ई. को हुआ। उनके पिता का नाम गोविन्दगिरी भञ्या और माता का नाम मनोरमा देवी थी। माधवदेव का बाल्यकाल साधन सम्पन्न नहीं था। कायस्थ जाति के उनके पिता वर्तमान बांगलादेश के रंगपुर के बाण्डुका के निवासी थे। वे पन्द्रहवी सदी के उत्तरार्द्ध में असम स्थित , आज के नगाँव जिले के बाड़दोवा नामक स्थान में आ बसे। यहीं कायस्थ जाति की एक लड़की से माधवदेव के पिता ने विवाह रचाया। मनोरमा नाम की यह लड़की शंकरदेव के दूर की रिश्तेदार थी।

हरिशिंगा नाम के एक सज्जन उन्हें लखीमपुर जिले के नारायणपुर के लेतेकुपुखुरी नामक स्थान पर ले आते है।

माधवदेव का असमीया गीतिकाव्य के क्षेत्र में एक विशिष्ट स्थान है। वे कृष्ण के उपासक थे और शंकरदेव के प्रिय शिष्य में से एक थे। उन्होंने प्राचीन असमीया भक्ति काव्य जगत को एक अभिनव उपहार बरगीत के रुप में प्रदान किया है। माधवदेव असमीया साहित्य के प्रथम भक्त कवि है जिन्होंने वात्सल्य भाव को अपने गीतों और काव्य में स्थान दिया। माधवदेव ने अपने गुरु शंकरदेव के आज्ञानुसार बरगीत की रचना करने के लिए अपने को प्रस्तुत किया। कहाँ जाता है कि शंकरदेव के बरगीतों की पांडुलिपि को बरपेटा (असम का एक जिला) के उनके एक भक्त पढ़ने के अपने घर वन मार्ग के ले जा रहे थे ; कि अकास्मात् वन में आग लग जाने के कारण बरगीतों की पांडुलिपि उसी में जल गयी। इसी दुःख के कारण शंकरदेव ने गीत प्रणयन करना छोड़ दिया और अपने प्रिय शिष्य माधवदेव को *किसु गीत कोरा* (कुछ और गीत लिखों) कहकर गीत प्रणयन करने के लिए आदेश

दिया। आज्ञा को शिरोधारी कर अपने गुरु की परम्परा को आगे बढ़ाने के लिए तैयार हुये। शंकरदेव बरगीतों के सृष्टिकर्ता है परन्तु माधवदेव ने बरगीत की परम्परा को आगे बढ़ाने में काफी योगदान भी दिया। शंकरदेव के उत्तराधिकारी के रुप में माधवदेव ने इसे (बरगीत) फलने-फुलने में बड़ी भूमिका का निर्वाह किया। बरगीत असमीया वैष्णव साहित्य की एक महत्वपूर्ण शाखा है। शंकरदेव के समय को असमीया साहित्य के इतिहास में '*भक्तिकाल*' तथा उनके तत्कालीन समय को '*शंकरी युग*' की संज्ञा से अभिहित किया गया है। असमीया गीतीकाव्य के क्षेत्र में बरगीत अपनी साहित्यिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्व को स्थापित करता है। असम में वैष्णव धर्म को प्रचार करने के लिए शंकरदेव और उनके शिष्य माधवदेव का प्रथम प्रयास बरगीत रहा है। यानी कि बरगीत के द्वारा शंकरदेव ने वैष्णव धर्म को फैलाने का बीड़ा उठाया। असमीया साहित्य में वैष्णव आन्दोलन को 'नव वैष्णव धर्म' की संज्ञा दिया जाता है। यह '*नव वैष्णव धर्म*' तत्कालीन बाह्मण्यवाद धर्म के खिलाफ उठ खड़ा हुआ एक भक्ति आन्दोलन है।

बरगीत की परिभाषाः-

बरगीत के सम्बन्ध में असमीया साहित्यकार डॉ. वाणीकान्त काकति का मानना है कि *"शंकरदेव के और माधवदेव के बरगीत उच्च नैतिक और आध्यात्मिक भावों पर प्रतिस्थित है। इसीलिए उन गीतों को बरगीत कहाँ जाता है। अंग्रेजी के कवि हेरिक (Herrick) ने भी आध्यात्मिक भाव पर आधारित कुछ कविता रचना करके उनको 'Noble Numbers' नाम दिया था। हमारे साहित्य में भी बरगीत 'Noble Numbers' है।"* बरगीत से हम यह अभिप्राय ले सकते है कि 'बर' अर्थात् श्रेष्ठ और गीत अर्थात् गीत। यानी जो गीत श्रेष्ठ कहलाने का अधिकारी हो वहीं बरगीत है। शंकरदेव और माधवदेव के गीतों को असम में श्रेष्ठ गीत के रुप में स्वीकार किया जाता है। जिसमें नैतिकता के साथ उच्च आध्यात्मिकता का भाव और परमार्थ की बात कहीं गई है। इसीलिए उसे बरगीत की संज्ञा से अभिहित किया जाता है। आज भी शंकरदेव और माधवदेव द्वारा रचित गीतों को विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों में बरगीत के रुप में गाया और सुना जाता है। शंकरदेव और उनके शिष्य माधवदेव द्वारा रचित भक्तिपक गीत समुहों को ही असमीया वैष्णव समाज ने बरगीत के रुप में स्वीकार किया है। आज बरगीत उनके गीतों का पर्याय बन चुका है। शंकरदेव और माधवदेव के परवर्ती काल में कुछ प्रमुख वैष्णव कवि हुये जैसे रामचरण ठाकुर, भवानी पुरीया, गोपाल आता, अनिरुद्ध देव, श्रीराम आता आदि। इन लोगों ने भी उनकी (शंकरदेव और माधवदेव) भाँति उसी शैली कुछ भक्ति परक गीतों की रचनायें की। उन गीतों को किसी किसी क्षेत्रों में बरगीत के रुप में गाया भी जाता था। परन्तु असमीया वैष्णव समाज नें उन गीत समुहों को बरगीत के रुप में स्वीकार नहीं किया और न ही उस श्रेणी में ही रखा। केवल शंकरदेव और माधवदेव के द्वारा रचित भक्तिपरक गीतों को ही बरगीत के रुप में ग्रहण किया। राजमोहन नाथ, कालिराम मेधि, देवेन्द्रनाथ बेजबरुवा, डॉ. वाणीकान्त काकति, डॉ. महेश्वर नेउग आदि प्रमुख आलोचकों ने भी शंकरदेव और माधवदेव के गीतों को ही बरगीत की संज्ञा से अभिहित किया। *कालिराम मेधि ने बरगीत को 'महान् गीत' या 'स्वर्गीय गीत' (Great Song या Song Celestial) कहकर उच्च आध्यात्मिक आदर्श की ओर इशारा किया।* शंकरदेव के बाद उनके शिष्य माधवदेव ने बरगीत की परम्परा को आगे बढ़ाया। यहाँ पर हम कह सकते है कि *'शंकरदेव और माधवदेव के द्वारा रचित भक्ति परक गीत या पद ही बरगीत के श्रेणी में आते है, अन्य वैष्णव कवियों के नहीं।'*

माधवदेव द्वारा विरचित बरगीतों की मूल विषय वस्तुः

कृष्ण भक्ति कवि माधवदेव के बरगीतों को मुलतः तीन भागों में विभक्त करके देखा जा सकता है। जैसेः-

1. *प्रार्थना प्रधान विषयक बरगीत।*
2. *उपदेश प्रधान विषयक बरगीत।*
3. *लीला विषयक बरगीत।*

उपरोक्त तीनों विभाजनों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करने पर माधवदेव के बरगीतों की विशेषताओं को सरलता पूर्वक अवलोकन किया जा सकता है। श्रीमाधवदेव असम के महान् संत शंकरदेव के परम शिष्य में से थे। शंकरदेव बरगीत के प्रणेता है लेकिन उनकी विरासत को उनके शिष्य ने काफी आगे बढ़ाया। भक्त कवि माधवदेव के तीनो स्तरों के बरगीतों में प्रभु की भक्ति, उनकी विविध लीलायें के वर्णनों के द्वारा समपूर्ण असमीया जनमानस को वैष्णव भक्ति से अनुरक्त करने का प्रयास किया।

बरगीतों के विभाजनों में से लीला विषयक गीतों को ही विशेष स्थान मिला है। विरह, परमार्थ विषयक गीत भी माधवदेव के बरगीत में देखने को मिलता है ; किन्तु संख्यों के दृष्टिकोण से देखा जाए तो लीला विषयक गीतों की अपेक्षाकृत उस प्रकार के गीत कम परिलक्षित होते है। कवि माधवदेव ने अपने बरगीत में सबसे अधिक नारी का पुत्र वात्सल्य रुप और मातृत्व का दर्शन कराया है। माधवदेव का प्रिय रस वात्सल्य रहा है , लेकिन भक्ति रस को भी अपने गीत में प्रतिपादित करने का पुरा प्रयास किया है। असमीया गीती काव्य के क्षेत्र में माधवदेव के द्वारा वात्सल्य रस में रचित बरगीत श्रेष्ठ और अनुठा है।

प्रार्थना प्रधान बरगीतः-

लेकिन यहाँ पर उपरोक्त विभाजन के आधार पर उनके द्वारा रचित बरगीतों को अध्ययन करने का प्रयास रहेगा। क्रम से सर्वप्रथम उनके प्रार्थना प्रधान विषयक गीतों से इस समीक्षा को आगे बढ़ाना अपेक्षित होगा। माधवदेव के प्रार्थना प्रधान बरगीत में को अगर देखा जाये तो उसमें हमें प्रभु के प्रति अनुरक्त सेवा भाव को देखा जा सकता है। माधवदेव के द्वारा रचित प्रार्थना प्रधान पारमार्थिक गीतों लगभग 25 पद होगें। इन गीतों में विशेष रुप से दार्शनिक पाण्डित्य की वुद्धिगाम्य की दर्शन की गम्भीरता है। भगवान की कृपादृष्टि की खोज में व्याकुल और आवेग में विह्वल भक्त कवि के हृदय की आकुलता को प्रकाशित करता है। हरि भक्ति इस क्षणभंगुर जीवन और संसार रुपी समुद्र के लिए ध्रुव तारा के समान है। इस तत्व को साधारण मनुष्य उपलब्धि नहीं कर सकता, जिस कारण मनुष्य झुठ-मुठ अनित्य संसार को ही सार तत्व मानकर तथा अनित्य जीवन-यौवन के राग में मतवाला होकर काम, क्रोध, मोह, लोभ आदि के वश में होकर विविध प्रकार के पाप कर्म में लिप्त रहता है। लेकिन जीवन का अस्थिर चीत इसे नहीं समझ पाता कि उनका पापमति देह एक दिन काल ग्रसित कर लेगा। दास्य भक्ति के एकांतिक साधक माधवदेव भी अपने अस्थिर चंचल मन को स्थिर नहीं कर पाया है। चंचल मन की चाहत में जीवन की लोभ-लालसा में वशीभुत होकर अस्थिर और क्षणिक को समझते हुये भी सांसारिकता विषय-वासनाओं में ही आसक्त रहा, और जीवन के महाधन स्वरुप भगवान के नाम को स्मरण करना भूल गया है। माधवदेव अपने को महाअधम, पापियों का पापी समझने लगे है। वे अंतकाल में पश्चताप करते हुये हरि भक्ति की लालसा से कहते है कि –

ध्रुवः- राम तेरि चरणकमले रति लागों
मागों भकति गोसाँइ
हामु अनाथ नाथ तुहुँ गोविन्द

अगतिक गति आवरि कोइ नाइ।।

पदः- निरमल भकति राज तूवा नाम गुण
ता बिना पतितपावन नाहि माइ।
हामु पतित तुमहि एकु पालक
इवेरि गोसाँइ बन्छबि नाहि सोइ।।
तुवा निज दास संगति रति भकति
तृण दशने मागोंहो प्रभु राम।
तव निज दासकु दासक लेवना
कहय माधव आवरि नाहि काम।। [1]

माधवदेव ने प्रभु को '*तुहु बिने आवरि सुदृद नाहि हेरोहो*' सम्बोधित करते हुये अपने को ईश्वर के चरणों में समर्पित किया है। '*दया करो हमारि* और *करिया उद्धार मोके चरण कमले*' कहते हुये पतित पावन भगवान के दोनों चरणों को पकड़कर दण्डवत प्रार्थना करते है। भक्त कवि इसी प्रकार की आवेग-विह्वलता पूर्ण गीत आदि प्राणस्पर्शी बन पड़ा है।

यूँ तो माधवदेव कृष्ण भक्त कवि लेकिन उनके भक्ति विषयक गीतों कृष्ण के साथ साथ राम को भी स्मरण किया गया है। एक उदाहरण दृष्तव्य हैः-

ध्रुवः- राम गोसाँइ करोहों गोहारि।
रहु हृदि-पंकज ठाम हामारि।।
पदः- माया छोड़ि भकति करु दाना।
करों तुवा चरण-पंकज मधुपाना।।
माधव दास कहतु राम तेरा।
जाहाँ जाहाँ चरण तोहे शिरो मेरा।। [2]

माधवदेव ने प्रस्तुत बरगीत को भक्तों के सम्मुख आशोवारी राग में गाया है। राम के सम्मुख प्रार्थना करते हुये कह रहे है कि हे ! गोसाइ राम मैं तुम्हारी प्रार्थना कर रहा हूँ कि तुम मेरे हृदय रुपी कमल में विराजमान हो जाइये और मेरे मन से माया को दूर कर भक्ति भाव को उसमे समाहित कर दीजिए। जिससे की मैं तुम्हारे चरणकमलों की मधुपान कर सकु। माधवदेव अपनी दास्य भक्ति को प्रदर्शित करते हुये कहते है कि हे राम, जहाँ जहाँ तुम्हारे चरणे होगे वहीं दास माधव के मस्तक होगा।

इसी क्रम से माधवदेव अपनी भक्ति भावना को प्रदर्शित करते हुये नारायण की लीला का अपरमपार बताया है। उसकी लीला को समझ पाना इतना सरल कार्य नहीं है। माधवदेव नारायण की लीला का बरगीत के माध्यम से वर्णन करते हुये कहते हैं कि-

ध्रुवः- नारायण माया जानव कोइ।
सुरपति चतुरबयन मुणि शंकर
चिन्तिते आकुल होइ।।
पदः- अघट घटन पटु चातुरी जो नित
अनित समान जो होइ।
जयते अनित नित सम भासत
ऐछन चातुरी हरि तोइ।।
कोइ कोइ सञ्चा कोइ कोइ मिछा
कबहु नियत नाहि जानि।।

सञ्चा मिछा समान कय भाषत
मोह करत वेदवाणी।।
सञ्चा मिछा किछुए नाहि जानत
मुरुख पामर मतिहीना।
जाहा जाहा गति मति तोहो कमलापति
कहतु माधव दास दीना।। [3]

भक्त कवि माधव ने कहाँ है कि हे नारायण,तुम्हारी माया को कोन समझ सकता है ? देवराज इन्द्र, चतुर्मुख ब्रह्म और शिव और नारद आदि जैसे सिद्ध जन भी तुम्हारी लीला को तत्काल नहीं समझ सकते। तुम्हारी चिन्तन में वे ओर अधिक व्याकुल हो उठते है। तुम्हारी माया बड़ी चतुराई से असम्भव को सम्भव कर दिखाता है। तुम्हारी लीला के कारण ही नित्य सत्य और असत्य दोनों ही एकसमान लगने लगता है। जितने भी अनित्य वस्तुयें है वहीं सर्वत्र विद्यमान जैसे लगने लगते है। हे हरि माया का सम्भव कार्य तुम्हारी लीला मात्र है। कौन कौन सी वस्तुये असत्य है और कौन सी वस्तुये सत्य है इसे निश्चित पूर्वक नहीं कहाँ जा सकता। तुम्हारे भेद-अभेद को नहीं जानकर वेद दोनो बातों को समान रुप से वर्णन करने लगता है जिससे सारे जनमानस के मन में परम शान्ति की अनुभूति होने लगती है। हम सब परम मुर्ख है, पापी है, मतिहीन है सत्य और असत्य की परख करना नहीं जानते है। इसी कारण हरि के दास माधव कहते है कि- हे कमलापति, जहाँ जहाँ पर गति, मति, बुद्धि आदि की प्रेरणा मिलती है वे सारे तुम्हारे ही कारण है।

माधवदेव ने बरगीत में दास्य भक्ति भावना को प्रकट करते हुये, परमार्थ की प्राप्ति की ओर अपने मन को अग्रसर किया है। माधव की सम्पूर्ण बरगीतों में भक्ति की सागर प्रवाहित होती है। सहृदय उनके भक्तिपरक गीतों को सुनकर और पढ़कर परम तृप्ति को प्राप्त कर सकता है। इस प्रकार के बरगीतों का प्रणयन करने के पीछे उनका एकमात्र उद्देश्य यह रहा कि उनके गुरु *श्रीमंत शंकरदेव* के द्वारा चलाये *'नव वैष्णव भक्ति मार्ग'* को पूर्ण रुप से असम में स्थापित करना था। माधवदेव ने परवर्ती काल में गुरु को कार्य को सफलता पूर्वक आगे का प्रयास आजीवन करता रहा। इसी प्रकार उनके बरगीत में भगवान विष्णु के विविध नामों का प्रयोग कर उनकी प्रति अपनी भक्ति को आगे बढ़ाया है। उनके कुछ और प्रर्थना प्रधान बरगीतों को देखने का प्रयास करेगे जिसमें अपने अराध्य को विविध नाम से स्मरण किया हैः-

ध्रुवः- कैछे गोविन्द सेवहु तोइ।
चंचल मन मेरि थिर नाहि होइ।। [4]

X X X

ध्रुवः- गोपाल कृपाल राम करुणासागर स्वामी।
तुवा पद मरकन्द बिन्दु आशा करि आछो तुमि।। [5]

X X X

ध्रुवः- मइ तेरि दासकु दासा करु करुणा मुरारि।
ए भवसागर मह तारहु तुवा चरणे हामारि।। [6]

माधवदेव ने उपरोक्त प्रार्थना प्रधान बरगीतों में अपने अराध्य को कभी *गोविन्द, गोपाल, मुरारि* आदि नामों से पुकारा है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि माधव देव नरायाण के अवतार कृष्ण रुप माधुरी पर अधिक आकर्षित थे। सूरदास की भाँति ही माधवदेव भी कृष्ण की भक्ति के प्रति समर्पित थे। ऐसे ही कतिपय प्रार्थना प्रधान गीत है जो परमार्थ की प्राप्ति के उद्देश्य से उन्होंने लिखा। जैसेः-

ध्रुव- नारायण सेवोहो चरण तोहारि
तुहु बिने आवरि सुहृद नाहि हेरोहो
दया करहि हामारि।।
पद- तुहु कृपाल करुणामय मानस
दया करु एकबारा।
निगम निदुढ सार तेरि नामा
रहु भरि बयने हामारा।।
भकति-आनन्दे बिन्दु कर दाना
मेरि यतने तेजि आशा।
पयरहि लागि शरण एकु मागो
दीन माधव मतिनाशा।। [7]

अर्थात् माधवदेव प्रभु के सम्मुख अपनी भक्ति भावना को प्रकट करते हुये कह रहे है कि नारायण, मैं तुम्हारी चरणों में प्रार्थना रहा हूँ। तुम्हारे अलावा मैं किसी ओर को हितकर सुहृद के रुप में नहीं देखा है।

ध्रुव- कैछे गोविन्द सेवहु तोइ।
चंचल मन मेरि थिर नाहि होइ।।
पद- जैसे पंकज दलगत नीर।
विषय लुब्ध मन तैछे अथिर।।
छोड़ि पामर मति तुवा पाइ।
रुप रस परश शबद गन्धे धाय।।
कहय माधव हरि करु मेरि दाया।
चरणे शरण लेहु छोड़ह माया।। [8]

परमार्थ विषयक गीतों में प्रभु के चरणों में आत्मसमर्पण का भाव दिखता है। यह उनके दास्य भक्ति भावना को प्रदर्शित करता है। जैसे-

ध्रुवः- दयार ठाकुर हरि यदुमणि ऐ राम
अधमे तोमार नाम डाके।
कृपा करा नारायण आमार चंचल मन
तोमार चरणे जेन थाके।। [9]

उपदेश प्रधान विषयक बरगीतः

शंकरदेव के आज्ञानुसार माधवदेव ने बरगीत प्रणयन करने के लिए आगे आये है। अपने गुरु की आदेश को शिरोधारी कर उन्होंने वैष्णव धर्म के प्रचार के उद्देश्य से गीत लिखना प्रारम्भ किया। बरगीत के अध्ययन से ऐसा अनुभव होता है कि हम कृष्ण के सगुण रुप से साक्षात्कार हो रहे है लेकिन ऐसा कदापि नहीं सोचना चाहिए। बरगीत में गुरु और शिष्य दोनो ने परमब्रह्म के निर्गुण निराकार रुप को ही अपने अराध्य का विषय बनाया। जो हमे निर्गुण भक्त कवि कबीर के सामने खड़ा कर देता है। साधारण आम जनता को भक्ति मार्ग से जोड़ने के लिए इससे अच्छा उपाय ओर किया हो सकता था। कबीर ने जिस भाँति समाज में साधारण समझे जाने वाले लोग- चमार, लुहार, कुम्हार, बुनकर आदि सभी को भक्ति के अथाह सागर में डुबोने का प्रयास किया है। ठीक इसी भाँति माधवदेव ने असम के विविध जनजातियों समुदायों को वैष्णव भक्ति के कोठोर विधि-विधानों से निकाल कर उनके गरु द्वारा स्थापित *नव वैष्णव भक्ति धर्म* ने जोड़ने का कुशल प्रयास किया। कृष्ण भक्त कवि माधवदेव अपने द्वारा प्रचारित वैष्णव भक्ति के सरलतम रुप से जोड़ने से भक्त जनों यहीं उपदेश देते

हुये कहते है कि वहीं एकमात्र परमब्रह्म है सच्चिदानन्द स्परुप है, वही हमे इस माया मय संसार से उद्दार कर सकते है। दास्य भक्ति का उत्कृष्ट उदाहरण *उपदेश प्रधान भक्ति गीत* कवि माधवदेव की अनुपम सृष्टि है। माधवदेव ने मनुष्यों के चंचल मन के उद्देश्य कर सांसारिक विषय-वासनाओं के प्रति इशारा करते हुये *उपदेश प्रधान भक्ति गीतों* का प्रणयन किया है। संसार की मोहमाया से मुक्ति होने का एकमात्र उपाय हरिभक्त ही है, और ऐसे तत्व ज्ञान से सम्बन्धित उपदेशों को कवि ने आवेगमयी भाषा के साथ वर्णित किया है।

धन-जन, जीवन सभी कुछ कमल के पत्ते के उपर ठहरे हुये जल की भाँति अस्थिर और क्षणभंगुर है। हरि भजन और भक्ति ही एकमात्र इस संसार रुपी समुद्र में डुबने से बचा सकता है। हरि के माया जाल में जीव बन्दी है, तीनो लोको में एक ऐसा स्थान नहीं है जहाँ उसके माया का जाल फैला न हो। हे मन ! वहीं माया जाल के सृष्टि कर्ता है उसी के शरण में जा कर उसके चरणों की भजन करने पर ही सांसारिक विषय वासनाओं से मुक्ति मिल सकता है। माधवदेव के उपदेश प्रधान भक्ति गीतों में राम, कृष्ण और विष्णु को विभिन्न रुपों में चित्रित किया गया है। उनके उपदेश प्रधान बरगीतों में कभी *'राम परम धन चिन्तहु मन भाई '*और कभी *'हरि पद मनोहर परम धन '*और कभी *'मन मजहु कमलापति गोपाल भावियो मन सकल जतने '*और कभी *'प्राणेर गोपीनाथ'*आदि संबोधनों द्वारा परम अराध्य के प्रति अपने अन्दर छिपे भक्ति भावना को प्रकट किया है। उन्होनें अपने गीत के पदों में ईश्वर को *राम, हरि, कमलापति विष्णु, गोपालक* तथा *गोपीवल्लभ कृष्ण* आदि सभी को एक ही कहाँ है। भक्त कवि माधवदेव ने जनमानस को अपनी उपदेशात्मक गीतों के माध्यम से उपकृत करने का प्रयास किया है। उपदेश प्रधान गीतों में माधवदेव की भक्ति भावना चरमों उत्कर्ष पर चड़ा हुआ दिखता है। जैसेः-

ध्रुवः- रे मन सेवहु हरिकहु चरणा
निकट देखहु निज मरणा।।
देखत हरिकहु चरण शरण बिने
नाहि नाहि भवभय तरणा।।
पदः- चारि बेद पुराण यत भारत
गीता भागवत चाइ।
उहि सार बिचार कय भाषत
हरि बिने तारक नाइ।।
सनक सनातन मुनि शुक नारद
चतुरबयन शूलपाणि।।
सहस्रबयन आदि गावत हरिगुण
सकल निगम तत्व जानि।।
कृष्ण नाम यश परम अमिया रस
गावत मूकूत निशेष।
परम मुरुखमति कहय माधव दीन
शंकर गुरु उपदेश।। [10]

अर्थात् हे मन! देखों अपनी मृत्यु काफी निकट है। हरि के चरणों का आश्रय ग्रहण करने के अलावा संसार की भय से मुक्ति पाने का और दूसरा मार्ग नहीं है। उसे ही देखकरके हरि के चरणों की सेवा कर। चार वेद, गीता सहित महाभारत और भागवत सहित जितने भी पुराण है सभी में खोज करके देखने के बाद सारतत्व के रुप में यहीं कहाँ गया है कि हरि के अलावा उद्धार कर्ता और कोई नहीं है। सनक, सनातन आदि मुनि, नारद, शुक,

ब्रह्मा, शिव और अनन्त नाग आदि सभी कोई एकमात्र हरि को ही शास्त्र के सारतत्व जान कर उसी का गुण गान और कीर्तन करते है। सांसारिक बन्धन से मुक्त होकर विचरण करने वाले भी परम अमृत रस तुल्य कृष्ण का नाम-यश का कीर्तन करता है। परम मुर्ख मति कवि माधव अपने गुरु शंकरदेव के उपदेशानुसार इस बात को कहाँ है।

कवि ने उपमा, प्रतीक आदि के द्वारा अति सरल पूर्वक अपनी भक्ति भावना को प्रकाशित करने का प्रयास किया है। उपदेशात्मक भक्ति परक गीतों में एक विशेषता यह है कि इन गीतों में देह-विचार अर्थात् क्षणभंगुरता की प्रति ध्वनि भी मुखरित हुआ है। *मजि रहु मेरि मन* गीत में मन को उद्देश्य करके कहा है कि हे भाई! जिस शरीर को तुम अपना समझ रहे हो, मृत्यु के समय साथ नहीं जाएगा। कवि ने सांसारिकता को हरि के सामने तुच्छ बताते हुये यह उपदेश देने का प्रयास किया है कि आजीवन उसी (हरि) का गुण-कीर्तन करते रहना चाहिए।

ध्रुव- हरिपदपंकज मेरि मनाइ।
चित चिन्तहु हृदि मिलाइ।।
पद- दुखभंजन भवतरणी।
हरिभकतर ए चिन्तामणि।।
हरिचरण शरण बिना।
गति नाहि नाहि मतिहीना।।
सुर शंकर जाकरु सेवा।
देखो सो पुनु देवकु देवा।।
दीन माधव मूरुखमति।
कहे हरिके परमगति।। [11]

अर्थात् हे मेरे मन! हृदय को एकनिष्ठ भाव से हरि के पद रुपी पंकज की चिन्ता कर। हरि भक्तों के लिए वहीं चिन्तामणि स्वरुप है। वही संसार के कलेशों के हरणकर्ता है और संसार रुपी समुद्र को पार कराने वाले एक नौका है। मतिहीन लोगों के लिए हरि के चरणों की शरण में ग्रहण करने के अलावा ओर कोई गति नहीं है।

कवि के द्वारा रचित उपदेश प्रधान गीतों की रचना करने उद्देश्य यह रहा है कि तत्कालीन समाज में एक नाम वाले धर्म की स्थापना किया जा सके। पन्द्रहवीं (15 वीं) शताब्दी के अन्त से पहले महापुरुष शंकरदेव ने नव वैष्णव धर्म एवं भक्ति का प्रचार करना प्रारम्भ किया। उनके उद्भव के समय असम में विविध प्रकार की उपभाषा, नाना धर्म, नाना प्रकार के आचार-विचार एवं पद्धतियाँ विद्यामान थी। नैतिक आदर्श, आध्यात्मिकता, साधना और सत्यधर्म के आचरण के अभाव ने तत्कालीन समाज व्यवस्था को विश्रृंखलित किये रखा था। जन साधारण के सम्मुख एक नैतिक आदर्श का अभाव होने के कारण अपनी रुचिनुसार पथ का अनुसरण करते थे। इसके अलावा भी तत्कालीन समय में वामाचारी तान्त्रिकों का प्रभाव कुछ-कुछ स्थानों में विशेष रुप से था। जैसे असम के शदिया (जिला तिनसुकिया) के ताम्रेश्वरी मंदिर, कामरुप में कामाख्या मंदिर आदि स्थान तान्त्रिको का केन्द्र था। तान्त्रिको के विविध मत, विविध देव-देवियों की उपासना और मान्यताओं ने आम लोगो का मन सनातन धर्म के प्रति उदासिन होने लगा था। आम जनसाधारण का मन सनातन के प्रति आस्थाहीन हो चुका था। इसके भी कई कारण थे। इस प्रकार के विकट परिस्थितियों में महापुरुष शंकरदेव ने जनता के सम्मुख प्राचीन सनातन धर्म का आदर्श नवीन स्वरुप में प्रस्तुत किया। असम के विविध प्रकार के धर्मावलम्बी एवं मतावलम्बी वालों में प्रेम, एकता का अभाव था। आध्यात्मिकता के भाव को जगाने के लिए एक सहज आचरण वाले धार्मिक पथ की आवश्यकता थी। उन्होंने इसके लिए *वैष्णव भक्ति* को और *नव वैष्णव धर्म* को एक नये रुप में प्रचार किया तथा प्राचीन वैष्णव धर्म को सांसारिक रुप दिया। शंकरदेव के द्वारा

प्रचारित नव वैष्णव भक्ति मार्ग को एक योग्य उतराधिकारी के रुप में माधवदेव ने आगे बढ़ाया। इस भक्ति मार्ग के अन्तर्गत दोनों संतों ने आम जनता के सम्मुख वैष्णव भक्ति को सरल रुप में प्रस्तुत किया। कवि के उपदेश प्रधान बरगीतों में भक्ति का सार तत्व देखने को मिलता है। हरि भक्ति की महत्ता को स्थपित करते हुये माधवदेव भक्त जनों से कहते है किः-

ध्रुवः- हरिपदपंकज पजंर मोइ।
तामह रहु राजहंसा होइ।।
पदः- रयनी दिवसे लिजञु राम नामा।
प्रपन्नजनाशनि-पजंर रामा।।
आवत कालभुजंगम गरजि।
हरिपदे शरण लेहु सब बरजि।।
माधव दास दीन हीनमति।
कहय रामचरण दुहों गति।। [12]

माधवदेव कहते है कि मैं हरिपदपंकज रुपी पिंजरे में राजहंस की तरह बंदी होकर रहु। शरणागतों के लिए राम ब्रज की तरह सुहृद अस्त्र है जो हमेशा सबकी सहायता प्रदामन करने वाले है। इसीलिए मैं दिन-रात राम नाम का स्मरण करता रहता हूँ। सर्प की भाँति मूर्तिमान काल गर्जन करते हुये समीप आने लगा है, इसीलिए सभी प्रकार के मोहो को त्याग कर हरि के चरणों में आश्रय लेना चाहिए। मतिहीन दीन दास माधव कहते है कि– राम के चरण युगो युगो तक सभी के लिए एकमात्र गति दाता है। इसी प्रकार से माधव के कई बरगीत है जिसमें उन्होंने हरि भक्ति को सरल रुप से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

ध्रुवः- रामक बाणी जपहु मन भाइ।
कलिको काले आवर गति नाइ।।
पदः- जाकेरि बयने रहतु रामबाणी।
ताकेरि चरण-रेणू लेहु जानि।।
राम चरण जोहि करत उपासा।
ताकेरि हुँ हामु दासको दासा।।
माधव दास मूरुखमति गाइ।
रहु मन भकत चरणरेणु लाइ।। [13]

X x x

ध्रुवः- चिन्तहु गोविन्द मन मेरि भाइ।
हृदयपंकजे रहु राम गोसाइ।।
पदः- जगजन जीवन रहु हृदि रामा।
कोटि कल्पतरु पूरण कामा।।
माधव दास कहय मन मोइ।
राम बिने नाहि बान्धव कोइ।। [14]

उपर्युक्त दोनों पदो में उन्होने अपनी दास्य भक्ति को दर्शाते हुये सभी को हरि की चरणों की सेवा एक दास के रुप में करने पर बल दिया है।

लीला विषयक बरगीतः-

माधवदेव के द्वारा रचित समस्त भक्ति गीतों में से आकर्षणीय और जनप्रिय गीत है। भागवत के केन्द्रिय चरित्र अलौकिक, असमान्य कृष्ण के शैशव और किशोर की अवस्था की मनमोहनीय लीला पर आधारित गीत है। भक्त कवि माधवदेव की संगीतज्ञ प्रतिभा वात्सल्य भक्ति के रसात्मक गीतों में सुन्दर ढ़ग से अभिव्यक्त हुआ है। इन गीतों की संख्या अधिक नहीं है लेकिन विषय वस्तुपान को लक्ष्य करके लिखे गये गीतों को मुख्यतः कई भागों में विभक्त कर सकते है। जैसे- कृष्ण के शिशु रुप के स्तनपान, चोर चातुरि, बन्धन, जागन, भोजन, प्रत्यावर्तन, खेलन, भुषण, हरण, कृष्ण के रुप माधुरी, गोपी विरह, ढोला रोहण, फाक खेलन और अनन्य लीला परक गीत आदि।

माधवदेव के बरगीत में अवतारी कृष्ण के दो व्यक्तित्व *ईश्वरीय और मानवीय* स्वरुप अति मर्मस्पर्शी होकर उभरा है। श्रीकृष्ण के शैशव और किशोराव्स्था की हँसी-क्रुन्दनों का समुज्जवल उनके बरगीतों में अभिव्यक्त हुआ है। माधवदेव ने मातृ यशोदा और पुत्र कृष्ण के चिन्तन, आवेग-अनुभूति, ममता आदि सभी को उपने भीतर उपलब्धि करने का प्रयास किया है। इसीलिए हरएक गीतें में नीजि व्यक्तिगत आवेग-अनुभूति प्रखरता से अपनी हृदय की वाणीरुप में स्वतः स्फुरत भाव से अभिव्यक्त हुआ है। भक्त कवि सूरदास और माधवदेव के गातों में काफी हदतक सादृश्य का अवलोकन किया जा सकता है। विशेष कर सूरदास के गोकुल लीला के अन्तर्गत शिशु कृष्ण के जागन, चलन, खेलन और चोर-चातुरि परक गीतों के साथ माधवदेव के इस विषय के गीतों की काफी समानतायें हैं। अगर संक्षिप्त में कहाँ जाये तो सूरदास और माधवदेव के शिशु के मनःस्थिति का चित्रण की प्रतिभा अतुलनीय है।

माधवदेव के द्वारा रचित लीला विषयक गीतों में बाल कृष्ण का विविध लीलाओं और नाना क्रीड़ाओं का सुन्दर वर्णन किया गया है। कृष्ण के नाना प्रकार की लीला एवं केली-क्रीड़ाओं आदि को उनके लीला विषयक गीतों के अन्तर्गत रखा गया है। विरह, विरक्ति, लीला, चोर चातुरी आदि विषयों के अलावा भी उनके बरगीतों में परमार्थ जैसे गम्भीर विषयों की अभिव्यक्ति हुआ है।

कृष्ण के रुप माधुरी का वर्णन करते हुये माधवदेव कहते है किः-

ध्रुवः- यादु भाल नाचतु, नन्दनन्दन गोविन्द नाचतु
ब्रजनायक नागर नाचतु परमानन्द रसे रे।
सुरासुरे जार चरणपंकज रेणु शिरे परशे रे।।
पदः- लावण्य सुन्दर कटि धरिया ए बाम हाते रे।
दक्षिण कोमल कर थापिया ए प्रभु माथे रे।।
कटिक किंकिणी बाजे नूपुर-रव पावे रे।
ईषत कटाक्ष हासि सुन्दर ভভভবঽভপধ্রুব चलावे रे।।
नाटेर माधुरी गोपी-मोहन मदन फान्दे रे।
यशोमती-नन्द-चकोर श्यामल सुन्दर चान्दे रे।।
चौभिति गोपिनी बेढ़ि हाटे तालि बजावे रे।
कहय माधव हरि भुवन-मन भुलावे रे।। [15]

संगीतात्मकता के दृष्टिकोण से उपरोक्त उपदेशात्मक बरगीत को माधवदेव ने नाट राग में गाया है। यदुवंश में अवतीर्ण नन्द के नन्द गोविन्द के कुमार रुप नृत्य कर रहे है। देव और असुर सभीलोग जिसके चरण रुपी कमल के पराग को अपने शिश पर धारण करते है, वही परमानन्द स्वरुप भगवान श्री कृष्ण अपनी लीला रस में अभिभुत होकर नागर ब्रजनायक रुप में नृत्यक कर रहे है। लीला नृत्य के अवस्था में प्रभु अपने सुकमल बाये हाथ को शिश पर रखे हुये है और बाये हाथ से अपने लावन्यमय कमर को पकड़े रखे हुये है। उनके कटि प्रदेश से किंकणी की रुनु-झुनु और चरणों के नूपुरों की मनमोहक ध्वनि आ रही है। उनकी कटाक्ष भरी मृदु मुस्कान और उनकी मन मोहक मद चाल से चलते हुये नृत्य करना जैसे गोपियों को मोहित करने के उद्देश्य से

कर रहे है। उसी में उनकी अभिनय की माधुरी रुप प्रकाशित हुआ है। यशोदा और नन्द चकोर पक्षी की भाँति श्याम सुन्दर रुपी चाँद के नृत्य दृश्य को देख कर आनन्द की प्राप्ति कर रहे है। गोपियाँ भी श्याम के नृत्य की शोभा में मोहित होकर चारो ओर घुम घुमकर तालियों के साथ उनका दे रहे है। माधवदेव कहते है कि इसी प्रकार परमात्मा कृष्ण नृत्य कर भकतों के दुखो को हरते है और समस्त भुवन वासियों को आनन्द विभोर करते आ रहे है।

अगर माधवदेव द्वारा विरचित लीला विषयक गीतों को देखा जाये तो इसे ओर कई भागों में विभक्त किया जा सकता है। जैसेः-

(क) *जागन विषयक गातों* में ग्वालों के साथ वन में गाये चराने जाने के लिए माता यशोदा का कृष्ण को नींद से जगाने का वर्णन को देखा जा सकता है। माता यशोदा पुत्र कृष्ण को सखा संग गो चराने जाने के लिए नींद से जगाती है। माधवदेव द्वारा चित्रित कृष्ण की लीलाओं में जागन की लीला का दृश्य भी मनोहारी है। कवि ने इस प्रसंग में अपनी कुशलता का परिचय दिया है। जैसे-

ध्रुवः- उठरे उठ बापु गोपाल है
निशि परभात भेल।
कमलनयन बुलि घने घन
यशोदा डाकिते लेल।। 16

X X X

ध्रुवः- उठ उठ बाबु चान्द बयन।
यशोदा मावे डाके घने घन।। 17

(ख) *चरन विषयक गीतों* में कृष्ण का सखा संग दही, माखन लेकर गौ चराने जाते हुये का मार्मिक वर्णन दिखाई देता है। माधवदेव की कृष्ण द्वारा गो चराने की लीला का वर्णन भी अनुपम है। माधवदेव ने कृष्ण और उनके सखाओं के गो चराने की लीला को बड़े ही मनोहारी रुप से वर्णित किया है। जैसे-

ध्रुवः- गोविन्द चलये विरिन्दावने गोपशिशु संगे।
बजावे मोहन बेनु धेनु धाय रंगे।। 18

X X X

ध्रुवः- परभाते श्यामकानु धेनु लैया संगे।
वंशीर निस्बाने वृदावन चले रंगे।। 19

(ग) *खेलन विषयक गीतों* में सखाओं के साथ वे किस प्रकार की क्रीड़ा अथवा खेल खेला करते थे उसका वर्णन किया गया है। कृष्ण की बाल लीलाओं में से खेलन लीला भा अनुपम है। वृंदावन में सखाओं के संग केलि-क्रीड़ाओं का जिस रुप में कवि ने वर्णन किया है वह बरगीतों के पदों में देखा जा सकता हैं। जैसे-

ध्रुवः- गोपाल खेलाय कदम्बतले।
भुवन मोहन मूरुति मधुर
मदन जिनिया ज्बले।। 20

X X X

ध्रुवः- भाल कलीया कानु खेलान खेलाय।
खेलार माधुरी हरि भुवन भुलाय।। 21

X X X

ध्रुवः- यशोनन्दन बालक मेले।

परम आनन्दे कोटोरा खेले।। [22]

(घ) गोकुल मे गोपियों के संग नाचना-गाना आदि क्रियाओं को *नृत्य विषयक गीतों* के अन्तर्गत रखा गया है। गोपीयों के संग किये गये लीला कृष्ण की प्रधान लीलाओं में से एक है। कृष्ण ने गोपीयों के संग रास लीलायें भी की है लेकिन वद रास और नृत्य का सम्बन्ध लीला वासनात्मक न होकर आत्मा-परमात्मा का मिलन है, इसे कवि का सांसारिक वर्णन नहीं कहाँ जा सकता। आध्यात्मिक दृष्टिकोण से कृष्ण और गोपीयो के मध्य का सम्बन्ध परमार्थिक है न की दैहिक। वृंदावन में गोपीयों और कृष्ण की नृत्य लीला को जो वर्णन माधवदेव ने किया है वह बहुत ही ह्दय स्पर्शी है। जैसे-

ध्रुवः भालि नाचे भाल मदनगोपाला।
बजावे मोहन बेनु गले बनमाला।। [23]

शंकरदेव की भाँति माधवदेव ने भी बरगीत में रामायण की विषय-वस्तुओं को देखा जा सकता है। जैसे-

ध्रुवः जय जय राम रघकुल पंकज
दिनकर राम मुरारि।
जो पदकमल सुरासुर सेवत
सकल भुवन अधिकारी।। [24]

X X X

ध्रुवः देखो रे नयन भरि लोई।
परम पुरुष राम राजा होई।। [25]

माधवदेव के द्वारा रचित बरगीतों में कृष्ण के रुप वर्णन पर आधारित बरगीत बड़ा ही मनेहारी और हृदयस्पर्शी है। जैसेः-

ध्रुवः- कद्मब तरुतले नवीन नीरद रुचिर सुन्दर श्याम।
भुवन-मोहन मूरुति मनोहर कतिहो नाहि उपाम।।
पदः- भुवन मनोहर नयन चञ्चर
वयन चान्द उजोर।
हासिते अमिया बरिषे पेखि सखि
जीवन नारहे मोर।।
कतना यतने विधि निरमिल
सुन्दर कानुक रुप।
पेखिते लावण्य लाज भयो पुनु
कोटि मन्मथ चुप।।
रतन भुषण जैसे निरमल
गगने तारा शुहाय।
कहय माधव हामारि मजु मन
नन्द नन्दन पाय।। [26]

कवि ने कृष्ण की लीला को प्रकृति के विपरित कहते हुये उसका मर्मस्पर्शी वर्णन किया हैः-

ध्रुवः- हरि तेरि लीला विपरित।
सुमरिते हामार आकुल करे चित।।
पदः- अनन्त ब्रह्माण्डपति हैया आपुने।
धरिलो लवणुचोर नाम केबा गुणे।।
ब्रह्मा हरे आराधे जाहार दुइ पाव।

से तुमि लवणु मागा गोवारिक ठाव।।
काल माया काम्पे जार नाम सुमरणे।
जशोवार भये तुमि कम्पा कि कारणे।।
जार मायापाशे बन्दी सकल संसार।
से तुमि बन्धन केने लैला यशोदार।।
जार आज्ञा पाले चराचर निरन्तरे।
केने धेनु राखा तुमि गोवालीर घरे।।
गरुड़ बाहन गति सदाइ जाहार।
से तुमि गोपीक बहा इ कोन विहार।।
जानिलों केवले तुमि भकतिर बश्य।
सकल निगमे प्रभु इ बर रहस्य।।
कहय माधव दास कठिन पामर।
तोमार दासरो दास भैलो दामोदर।। [27]

कवि ने प्रभु की लीला को अपरम्पार मानते हुये भक्ति भाव से उनकी दासता को स्वीकार किया है।

बरगीत प्रणयन का उद्देश्य यह रहा है कि इसके माध्यम से निर्गुण निराकार परम ब्रह्म को साकार रुप में विविध नाम देकर एकमात्र उपास्य देवता मानकर उन्हीं का गुण गान किया है। शंकरदेव की भाँति माधवदेव ने भी बरगीत में कृष्ण को रासलीला करने वाले प्रेमी के रुप में नहीं, अपितु उनको परमात्मा का स्वरुप मानकर उसका वर्णन एवं चित्रण किया गया है। माधवदेव के बरगीतों की विषय वस्तु की चर्चा की सुविधा के लिए इसे चार भागों में विभक्त कर सकते हैं। जैसे- **(क) बरगीत में बाल गोपाल का वर्णन, (ख) बरगीत में गोपी उद्धव सम्वाद वर्णन, (ग) बरगीत में सच्चिदानंद भगवान नारायण का वर्णन, और (घ) बरगीत में अभिव्यक्त आध्यात्मिक और दार्शनिक आदर्श।**

(क) **बरगीत में बाल गोपाल का वर्णनः-**माधवदेव ने श्री कृष्ण के वात्सल्य वर्णन को देख सकते है। श्रीकृष्ण की विविध लीलायें जो सदेव भक्तों को आनन्दित और अह्लादित करते आ रहे हैं उसका एक मात्र का कवियों का अथक प्रयास ही है। माधवदेव को असमीया साहित्य के वात्सल्य रस कवि के रुप में जाना जाता है। कवि ने कृष्ण की बाल कृत्यों जैसे वृंदावन के कालिन्दी के किनारे गौ चराना, बाँसुरी बजाना और नाना प्रकार आनन्द की अनुभूति करना आदि का चित्रण किया है। बरगीत में बाल गोपाल का रुप वर्णन अति मनमोहक बन पड़ा है। उसका रुप और सौन्दर्य गोकुल वासियों को हमेशा आकर्षित किये रहता है। एक ग्वाल गोपाल की रुप सौन्दर्य के दर्शन के लिए अपनी माता को पुकारती हैः-

ध्रुवः- माइ हेर गोकुल चान्द आवे
सकल बालक माजे जिनि नटवर साजे
हासि रसे भुवन भुलावे।।
पदः- श्याम शरीर पीत पट परिलम्बित
कण्ठे कदम्ब माला लुले।
रुपे कोटि-मदन मन मोहन
शिरे शिखण्डक दुले।।
धेनु पदरेणु करे कनक बेणु
लहु लहु पञ्चमगाय।
कटि तट किंकिणी पावे नूपुर धवनि

हरषे हरसे धेनु धाय।।
कानुक चान्दबयन घन घन हेरते
गोपिनी दरशन पाया रे।
कहय माधव हरि-चरण शिरे धरि
दीनवत्सल करु दाया रे।। [28]

गोपियाँ आपस में बाते करते हुये कृष्ण की चर्चा करते हुये कहते है कि-

ध्रुवः- सखि हे चले कानु विरिन्दावने।
बयन चान्देर सुधा नयन चकोर दुहों
पिया थाकों हेन लय मने।। [29]

(ख) **माधवदेव के बरगीत में गोपी विरह का वर्णनः-**कृष्ण का गोकुल छोड़कर मथुरा चले जाने के बाद उनके परम भक्त गोपियों की विरह दशा का मार्मिक वर्णन किया है। गोपियाँ कृष्ण की भक्ति में पति-पुत्र की अभिलाषा कर सिर्फ कृष्णके चरणों की ही चिन्ता कर रहे है।

ध्रुवः- प्राणनाथ नकरा बन्चित।
तोहारि वियोग आगि दहे मोर चित।
ऐ बन्ध माधव हे।
पदः- पति सुत सुहृद सोदर बन्धुजन।
सब सुख तेजि भजो तोहारि चरण।।
सोहि प्राणनाथ तुहों जाहा काहाँ लागि।
नरहे जीवन मोर तेरि लागि आगि।।
सब तेजि तोहारि चरणे कैलों आश।
भकतवत्सल स्वामी नकरा नैराश।।
बिने तुहो रहय जीवन नाहि मोइ।
तुहो बिने हामारि बान्धव नाहि कोइ।।
हास्य निरीक्षण तेरि मधुर आलाप।
सुमरि सुमरि मेरि मिले हृदि ताप।।
धरणी लुटिया गोपी करत क्रन्दन।
कहय माधव गति नन्देर नन्दन।। [30]

कृष्ण के गोकुल छोड़ने के बाद गोपियों की दशा बहुत गम्भीर हो जाती है। कृष्ण के बिना गोपीयों को गोकुल सुना और अंधियारा लगने लगा है। जिसका वर्णन कवि ने किया हैः-

ध्रुवः- गोकुले आजु गोपाल बिने भयो अन्धियारि।
उगत सुर दूर गयो रे मुरारि।।
पदः- हामारि जीवन दूर गयोरे गोविन्द।
नयने नदेखो आर पद अरविन्द।।
रवि बिने दिन नोहे जल बिने न मीन।
हरि बिने गोपीर जीवन भैल क्षीण।।
धरणी लुटिया गोपी फोकारे सघन।
कहय माधव गति नन्देर नन्दन।। [31]

कृष्ण गोपियों की आकुलता को जानकर उनको विरह की दशा से उबारने के लिए मथुरा के मित्र को उद्धव को गोकुल भेजने का उपाय निकालते है। ताकि उद्धव गोकुल जाकर उनको कृष्ण का सन्देश दे सके।

ध्रुवः- चल रे चल बन्धु उद्धव हे
मेरि सुमरि गोकुल मन दहे।
गोपी आकुल हामु बिरहे।।
पदः- सुमरि सुमरि मन झुरय घन घन
धरिते नपारो हिआ।
हामात नित नित सुम्पि प्राण चित
सयल गोपिनी धरे जीव।।
पुत्र परिवार छाड़ल निरन्तर
हामाते कयो पति आष।
माधव दास दीन कहय भकतिहीन
हौँ हरि दासकु दास।। [32]

(ग) **माधवदेव के बरगीत में सच्चिदानंद भगवान नारायण का वर्णनः-**माधवदेव ने कृष्ण को परमानन्द स्वरुप जानकर उसकी वन्दना करता है। ब्रह्म, शिव आदि सभी देवता भी उन्हीं का गुण-गान करते है और वहीं सकल संसार के पालनकर्ता है।

ध्रुवः- जय जय नन्द नन्दन परमानन्द
बन्दो बालगोपालं।
यो पदपंकज-रज अज बन्दय
सकल भुवन एकु पालं।।
पदः- रोमबिबरमह कोटि कोटि अण्ड
जैछन अणु परमाणि।
नन्दन्दन कति नाम धरत सोहि
तुहि लीला कोइ जानि।।
दीनदयाल जगजनतारण-
कारण उहि अवतारा।
परम मरुखमति कहय माधव दीन
गति मेरि नन्दकुमारा।। [33]

(घ) माधवदेव के बरगीत में अभिव्यक्त आध्यात्मिक और दार्शनिक आदर्शः-

माधवदेव के बरगीत में आध्यात्मिक और दार्शनिक भाव पूर्ण रुप से पूर्ण रुप से अभिव्यक्त हुआ है। कवि ने उपास्य देव को साधरण मनुष्यों से परे बताया है। वह अगम और अगोचर है, उसके गुणों को कोई वर्णन नहीं कर सकता, उसका पार पाना आसान कार्य नहीं है। कवि ने आध्यात्मिक और दार्शनिक की भावना को अपने गीतों के माध्यम से सरल रुप में वर्णित किया है। आध्यात्मिक और दार्शनिक की भावना के द्वारा कवि ने हरि की भक्ति की महत्ता को जनसाधरण के मध्य स्थापित करने का प्रयास किया है। सांसारिक प्रवृत्तियाँ काम, क्रोध, लोभ, मद, वासना, माया आदि मनुष्य को भ्रमित कर उलझाती रहती है। कवि ने भारतीय वेदान्त दर्शन के अद्वैतवाद अर्थात् ब्रह्म सत्य जगत मिथ्या को प्रकाशित किया है। माधव ने बरगीत में भक्ति से ही ईश्वर की करुणा लाभ करने का उपाय बताया है। बरगीत में श्रवण-कीर्तन के अलावा प्रेमभक्ति, दास्यभक्ति और एकचरण भक्ति मार्ग का वर्णन किया है। *'एक नाम धर्म '*माधवदेव के गुरु शंकरदेव के भक्ति मार्ग का प्रमुख सिद्धान्त रहा है।

ध्रुवः- नारायण के गुण जानव तोइ।
करहु करुणा नाथ अधमक मोइ।।
पदः- सहस्र बयने गुण गावत भिन भिन
बयने करत बखाना ।
तोहारि नाम गुण यश महिमाक
तबहु अन्त नाहि जाना।।
महामुणि चतुर-बयन सुर शंकर
मोहित जाकेरि माया।।
चारि वेद विचार करि आवत
जाकेरि अन्त नपाया।।
सनक सनातन आदि योगीगण
जाकेरि महिमा न जाना।
हामु मूरुखमति कमने जानव हरि
गति तुहु माधव गाना।। [34]

ईश्वर पाप विनाशक है, वह सदैव भक्तो के संकटों का निदान करते है। इसीलिए उसी का नित्य सेवा और अर्चना किया जाना चाहिए। इसी के द्वारा ही परम आनन्द की प्राप्ति हो सकता है। माधवदेव कहते है किः-

ध्रुवः- गोपीनाथ, जगजीवन स्वामी राम, सेवहों तोइ।
हरि करहु करुणा नाथ मोइ।। [35]

X X X

ध्रुवः- मोके बिना मति दिले गोपाल
तुमि अगतिर गति।
ए भवभञ्जन तोमार चरण
सेविते नकरों रति।। [36]

निष्कर्षतः कहाँ जा सकता है कि उपरोक्त उल्लेखित बरगीतों के विभाजनों में से चोर-चातुरि और लीला विषयक गीतों को ही विशेष स्थान मिला है। विरह, परमार्थ विषयक गीत भी माधवदेव के बरगीत में देखने को मिलता है; किन्तु संख्यों के दृष्टिकोण से देखा जाए तो लीला विषयक गीतों की अपेक्षाकृत उस प्रकार के गीत कम परिलक्षित होते है। कवि माधवदेव ने अपने बरगीत में सबसे अधिक नारी का पुत्र वात्सल्य रुप और मातृत्व का दर्शन कराया है। माधवदेव का प्रिय रस वात्सल्य रहा है, लेकिन भक्ति रस को भी अपने गीत में प्रतिपादित करने का पुरा प्रयास किया है। असमीया गीती काव्य के क्षेत्र में माधवदेव के द्वारा वात्सल्य रस में रचित बरगीत श्रेष्ठ और अनुठा है। रसों के साथ-साथ उन्होंने अपने बरगीत में उपमा, रुपक, अनुप्रास, आदि अलंकारो का भी प्रयोग किया है। वैष्णव धर्म के प्रचार के उद्देश्य से बरगीत का प्रणयन किया गया था। इसके माध्यम से निर्गुण निराकार परम ब्रह्म को साकार रुप में विविध नाम देकर श्रीकृष्ण, राम, नारायण और गोपाल आदि को एकमात्र उपास्य देवता मानकर उन्हीं का गुण-गान किया है। माधवदेव के बरगीत में कृष्ण को रासलीला करने वाले प्रेमी के रुप में नहीं, अपितु उनको परमात्मा का स्वरुप मानकर वर्णन एवं चित्रण किया हैं। बरगीत में श्रीकृष्ण को परित्राण कर्ता और पापविनाशक रुप में वर्णन किया गया है। बरगीत को हम आध्यात्मिकता की कसौटी पर उतार कर देख सकते है।

माधवदेव के बरगीतों की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें विविध रागों का भी निदर्शन है। उनके बरगीतों में सत्ताईस (27) प्रकार के रागों उल्लेख मिलता है। जैसेः- आशोवाली, अहिर, माऊर(मान्हार),

श्री, धनश्री, भटियाली, तुर-भटियाली, सुहाई, सिन्दुरा, वसन्त, बरारी(बड़ारी), तुर-वसन्त, बलोवार, मल्लार, नट-मल्लार, श्रीगन्धार, नाट, ललित, गौड़ी (गौरी), श्याम, श्याम-गोड़ा, कामोद, कौ, केदार, कानाड़ा, और भुपाली आदि। असमीया शास्त्रीय संगीत और असमीया गीति साहित्य के क्षेत्र में माधवदेव और उनके गुरु शंकरदेव के बरगीत एक अतुलनीय अवदान है।

बरगीत की भाषा को ब्रजाबुली भाषा की संज्ञा से अभिहित किया गया। यह ब्रजाबुली एक प्रकार की कृतिम भाषा है, जिसे असमीया, संस्कृत, ब्रज, ओड़िया, बाङला, नेपाली आदि भाषा को मिलाकर तैयार किया गया। बरगीत में साहित्यिकता, काव्यात्मकता और संगीतात्मकता का सुन्दर समाहार रुप देखने को मिलता है।

टिप्पणीः इस आलेख में जितने भी माधवदेव के द्वारा रचित बरगीत के पद लिए गये हैं सभी को स्वयं द्वारा मूल भाषा असमीया से हिन्दी में लिपियान्तरण किया है।

सन्दर्भः-

1. माहपुरुष श्री श्री शंकरदेव और माध्वदेव विरचित बरगीत, पृष्ठ संख्या- 116
2. उपर्युक्त, पृष्ठ संख्या- 105
3. उपर्युक्त, पृष्ठ संख्या- 106
4. उपर्युक्त, पृष्ठ संख्या- 110
5. उपर्युक्त, पृष्ठ संख्या- 112
6. उपर्युक्त, पृष्ठ संख्या- 113
7. उपर्युक्त, पृष्ठ संख्या- 109
8. उपर्युक्त, पृष्ठ संख्या- 110
9. उपर्युक्त, पृष्ठ संख्या- 122
10. उपर्युक्त, पृष्ठ संख्या- 133
11. उपर्युक्त, पृष्ठ संख्या- 136
12. उपर्युक्त, पृष्ठ संख्या- 134
13. उपर्युक्त, पृष्ठ संख्या- 134
14. उपर्युक्त, पृष्ठ संख्या- 135
15. उपर्युक्त, पृष्ठ संख्या- 153
16. उपर्युक्त, पृष्ठ संख्या- 227
17. उपर्युक्त, पृष्ठ संख्या- 128
18. उपर्युक्त, पृष्ठ संख्या- 131
19. उपर्युक्त, पृष्ठ संख्या- 232
20. उपर्युक्त, पृष्ठ संख्या- 205
21. उपर्युक्त, पृष्ठ संख्या- 207
22. उपर्युक्त, पृष्ठ संख्या- 245
23. उपर्युक्त, पृष्ठ संख्या- 211
24. उपर्युक्त, पृष्ठ संख्या- 241

25. उपर्युक्त, पृष्ठ संख्या- 243
26. उपर्युक्त, पृष्ठ संख्या- 226
27. उपर्युक्त, पृष्ठ संख्या- 206
28. उपर्युक्त, पृष्ठ संख्या- 200
29. उपर्युक्त, पृष्ठ संख्या- 225
30. उपर्युक्त, पृष्ठ संख्या- 222
31. उपर्युक्त, पृष्ठ संख्या- 221
32. उपर्युक्त, पृष्ठ संख्या- 223
33. उपर्युक्त, पृष्ठ संख्या- 119
34. उपर्युक्त, पृष्ठ संख्या- 111
35. उपर्युक्त, पृष्ठ संख्या- 130
36. उपर्युक्त, पृष्ठ संख्या- 131

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः-

असमीयाः

1. बरुवा, शान्तनु कौशिक, सम्पादन और संकलनकर्ता, (तृतीय संस्करण, 2009), माहपुरुष श्री श्री शंकरदेव और माध्वदेव विरचित बरगीत, प्रकाशकः ज्योति प्रकाशन, पानबजार, गौहाटी – 01, असम।
2. वर्मन, शिवनाथ, सम्पादक, (प्रथम संस्करण, जून, 1991), शंकरदेव, असमीया साहित्यर बुरंजी, प्रकाशकः आनन्दराम बरुवा भाषा-कला संसकृति संस्था, उत्तर गौहाटी – 30, असम।
3. महन्त, बापचन्द्र, (द्वितीय संस्करण, अक्टूबर, 2012), महापुरुषर शंकरदेवर बरगीत, प्रबन्ध गानर परम्परागत बरगीत, प्रकाशकः बनलता, नतुन बजार, डिबरुगढ़ – 01, असम।
4. महन्त, बापचन्द्र, सम्पादक, (प्रथम संस्करण, अगस्त, 1992), बरगीत, प्रकाशकः स्टुडेन्ट स्टोरस, कॉलेज होस्टेल रोड, गौहाटी – 01, असम।
5. शर्मा, कुसुम चन्द्र, (प्रथम संस्करण, अक्टूबर, 2004), शंकरदेव साहित्यर आभाख, वैष्णव भक्तिवाद शंकरदेव आरु माधवदेवर साहित्य आलोचना, प्रकाशकः श्रीमती कामेश्वेरी देवी, हेमन्तिका, जापारकुसि, नलवारी, असम।
6. काकति, डॉ. वाणीकान्त, (पंचम संस्करण, अगस्त, 2011), बरगीत शीर्षक प्रबन्ध, पुरनि असमीया साहित्य, प्रकाशकः राजेन्द्र प्रसाद मजुमदार,असम प्रकाशन परिषद, गौहाटी – 21, असम।